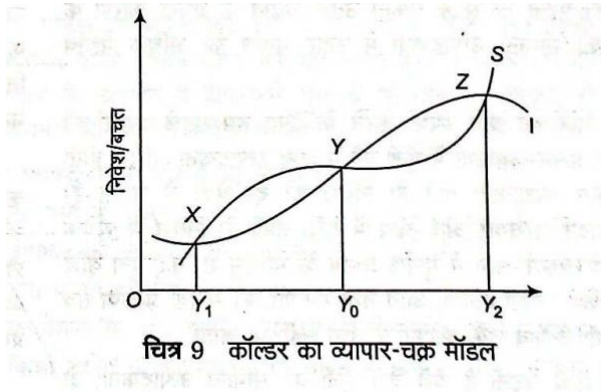


### कॉल्डर का व्यापार-चक्र सिद्धान्त

कॉल्डर के अनुसार व्यापार-चक्र तभी सम्भव है जब बचत और निवेश अरेखीय (Non-Linear) हों। कॉल्डर के अनुसार व्यापार-चक्र दबावों का प्रभाव है, जो अर्थव्यवस्था की नियोजित बचत और निवेश की समानता की ओर ले जाता है।

कॉल्डर के अनुसार अर्थव्यवस्था की तेजी अपने आप ही निश्चित रूप में समाप्त हो जाएगी। परन्तु मन्दी स्थैतिज स्थिति में पड़ सकती है वहीं रह सकती है जब तक कि बाह्य परिवर्तन (जैसे-नई मार्किटों का खोलना) उसके बचाव में नहीं आते। फिर कॉल्डर के मॉडल में चक्र समान लम्बाई और अवधि के आवश्यक तौर से नहीं होते हैं और न ही प्रसार और संकुचन आवश्यक तौर से समरूपक होते हैं।



### आय

उपरोक्त रेखाचित्र में I और S क्रमशः अरेखीय निवेश फलन तथा बचत तथा फलन हैं। रेखाचित्र में x, Y, Z बहु सन्तुलनों को दर्शाता है। इनमें से x, z स्थिर सन्तुलन हैं और Y अस्थिर सन्तुलन है। Y और Z के बीच तथा x बिन्दु से नीचे  $I > S$  हैं। परिणामस्वरूप आय का स्तर बढ़ेगा, लेकिन X और Y के बीच और Z बिन्दु से नीचे  $I > S$  हैं परिणामस्वरूप आय का स्तर बढ़ेगा। लेकिन X और Y के बीच और बिन्दु z के ऊपर,  $S > I$  हैं परिणामस्वरूप आय का स्तर घटेगा।

दीर्घकाल में x और z पर स्थिर सन्तुलन अस्थिर होता है मगर अल्पकाल में स्थिर होता है। x और z की स्थितियाँ दीर्घकाल में स्विच बिन्दु (Switch Points) हैं। बिन्दु Y दोनों दिशाओं की ओर अस्थिर होता है। जब बिन्दु Y और z नजदीक आते हैं, तो व्यापार-चक्र की प्रसार अवस्था प्रारम्भ होती है। जब वे मिलते हैं तो प्रसार समाप्त हो जाता है और संकुचन प्रारम्भ होता है।

## कीन्स का व्यापार-चक्र सिद्धान्त (Keynes' Theory of the trade cycle)

कोन्स का व्यापार-चक्र सिद्धान्त उसके आय, उत्पादन तथा रोजगार विषयक सिद्धान्त का अभिन्न अंग है। व्यापार-चक्र आय, उत्पादन तथा रोजगार के आवर्ती (periodic) उतार-चढ़ाव होते हैं। कीन्स मानता है कि व्यापार चक्र का प्रमुख कारण "पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में चक्रीय परिवर्तन है जोकि भले ही पेचीदा होता है और जिसे अर्थव्यवस्था के अन्य महत्वपूर्ण अल्पकालीन चरों में सम्बद्ध परिवर्तन प्रायः गम्भीर बना देते हैं।"

कीन्स के अनुसार मन्दी तथा बेरोजगारी का प्रमुख कारण है, समस्त माँग का अभाव। समस्त माँग बढ़ाकर पुनरुत्थान किया जा सकता है और उपभोग अथवा तथा निवेश बढ़ाकर समस्त माँग बढ़ाई जा सकती है। क्योंकि अल्पकाल में उपभोग तो स्थिर रहता है, इसलिए निवेश बढ़ाकर पुनरुत्थान किया जा सकता है। इसी प्रकार अवनति का प्रमुख कारण है, निवेश होने वालो कमी। इस प्रकार, व्यापार-चक्र की कीन्सीय व्याख्या में हेन्सन के शब्दों में "चक्र वस्तुतः निवेश की दर में उतार-चढ़ाव पर निर्भर करता है और निवेश को दर में उतार-चढ़ाव लाने का प्रमुख कारण पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में होने वाले उतार-चढ़ाव रहते हैं।" पूँजी की सीमान्त उत्पादकता, पूँजी परिसम्पत्तियों की पूर्ति कीमत तथा उनके प्रत्याशित प्रतिफल पर निर्भर करती है। क्योंकि अल्पकाल में पूँजी परिसम्पत्ति की पूर्ति कीमत स्थिर रहती है, इसलिए पूँजी को सीमान्त उत्पादकता को पूँजी परिसम्पत्ति के प्रत्याशित प्रतिफल निर्धारित करेंगे, जो आगे व्यापार प्रत्याशाओं पर निर्भर रहेगे। ब्याज की दर में उतार-चढ़ाव भी निवेश की दर में उतार-चढ़ाव उत्पन्न करते हैं। परन्तु कोन्स ने चक्रीय उतार-चढ़ाव के प्रमुख कारण के रूप में पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में उतार-चढ़ाव को अधिक महत्व दिया है।

कीन्सीय चक्र का क्रम स्पष्ट करने के लिए हम पहले प्रसार की अवस्था लेते हैं।

प्रसार-अवस्था में पूँजी की सीमान्त उत्पादकता अधिक होती है। व्यापारी लोग आशावादी होते हैं। निवेश की दर तेजी से बढ़ती है। परिणामतः उत्पादन, रोजगार और आय में वृद्धि होती है। निवेश में प्रत्येक वृद्धि के परिणामस्वरूप आय में गुणक प्रभाव के माध्यम से, कई गुना वृद्धि होती है। इस प्रकार, बढ़ते निवेश, आय तथा रोजगार की संचयी प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक व्यापारिक तेजी नहीं आ जाती।

जैसे-जैसे तेजी बढ़ती है वैसे-वैसे पूँजी की सीमान्त उत्पादकता, दो कारणों से गिरने लगती है। प्रथम, ज्यों-ज्यों पूँजीगत वस्तुओं का लगातार उत्पादन होता है, त्यों-त्यों उस पर चालू प्रतिफल घटता जाता है। दूसरे, साथ-साथ माल और श्रम की कमियों तथा अड़चनों के कारण नई पूँजी वस्तु

को चालू लागते बढ़ती जाती हैं। “इस प्रकार पूँजी वस्तुओं के भावी प्रतिफलों के चालू आशावादी अनुमान का भ्रम टूटता जाता है। पूँजी की सीमान्त उत्पादकता का पतन तेजी से तरलता अधिमान में तीव्र वृद्धि ला देता है। इससे ब्याज की दर बढ़ जाती है, और इस प्रकार स्थिति गम्भीर हो जाती है। परन्तु व्यापारी जगत का अनियन्त्रित एवं अवज्ञापूर्ण मनोविज्ञान पूँजी की सीमान्त उत्पादकता के चक्रीय उतार-चढ़ावों को अधिक प्रचण्ड बना देता है।

अवनति में, पूँजी का सीमान्त उत्पादकता गिरने और ब्याज की दर बढ़ने के कारण निवेश गिर जाता है। इसके परिणामस्वरूप आय तथा रोजगार में, गुणक के उल्टे प्रचालन के माध्यम से, संचयी पतन आरम्भ हो जाता है या फिर, हो सकता है कि पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में पतन, उपभोग फलन को नीचे की ओर सरका दे और इस प्रकार जल्दी मन्दी ले आए। चक्र की अवनति, जो संकट एवं मन्दी लाती है- की व्याख्या के रूप में केन्स ने ब्याज की दर में वृद्धि की अपेक्षा पूँजी की सीमान्त उत्पादकता के अकस्मिक पतन को अधिक महत्व दिया है।

आर्थिक प्रणाली का पतन तो सहसा हो जाता है। परन्तु पुनरुत्थान में समय लगता है। यह उन साधनों पर निर्भर करता है जो पूँजी की सीमान्त उत्पादकता को पुनरुत्थान करते हैं। पुनरुत्थान प्रारम्भ होने से पहले कितना समय गुजरे यह अंशतः अर्थव्यवस्था की संवृद्धि की सामान्य दर के आकार पर और अंशतः पूँजी वस्तुओं के जीवनकाल पर निर्भर करता है। टिकाऊ परिसम्पत्तियों का जीवनकाल जितना कम होगा मन्दी भी उतने ही कम समय तक रहेगी और फिर सम्बन्धि की दर जितनी तेज होगी मन्दी उतने ही कम समय तक रहेगी।

क्लास M.A. SEM-II

शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics दिनांक 13-05-2020,समय-2:10 PM

### आलोचनाएँ

पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में पतन संकट की सही व्याख्या नहीं - कीन्स ने पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में आकस्मिक पतन को अवनति के लिए उत्तरदायी ठहराया है। प्रो. हैजलिट के अनुसार, “पूँजी की सीमान्त उत्पादन शब्द अस्पष्ट एवं धुमिल है, इसलिए कीन्स द्वारा प्रस्तुत की गई पूँजी की सीमान्त उत्पादकता के संकट की व्याख्या या तो बेकार स्वयंसिद्ध है, या फिर स्पष्टतः गलत है”

पीग के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त से भिन्न नहीं - कीन्स मानता है कि व्यापार-चक्र का मुख्य कारण पूँजी की सीमान्त उत्पादकता में होने वाले उतार-चढ़ाव हैं। आगे पूँजी की सीमान्त उत्पादकता निवेश की दर को निर्धारित करती है और निवेश सम्बन्धी निर्णय व्यापारियों अथवा उत्पादकों के मनोविज्ञानका पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार कीन्स का सिद्धान्त भी पोगू के व्यापार-चक्र मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त से बहुत भिन्न नहीं है।

पूर्ण सिद्धान्त नहीं - कीन्स के व्यापार-चक्र के सिद्धान्त को एक कमजोरी यह है कि इसके कुछ चर, जैसे प्रत्याशाएँ पूँजी को सोमान्त उत्पादक और निवेश व्यापार चक्र की विभिन्न अवस्थाओं की व्याख्या नहीं कर पाते। प्रो. डिल्लर्ड के शब्दों में, "यह व्यापार चक्र का पूर्ण सिद्धान्त नहीं है, क्योंकि कि यह व्यापार चक्र कि विभिन्न अवस्थाओं का विभिन्न विवरण प्रस्तुत करने का कोई प्रयत्न नहीं करता।"

तथ्यात्मक प्रमाण का अभाव - प्रो. सोलनियर ने कीन्स के **Notes on the Trade Cycle** की आलोचना करते हुए कहा है कि उसमें तथ्यात्मक प्रमाण का अभाव है। उसका मत है कि कीन्स ने अपने अनुमानों को तथ्यों को कसौटी पर परखने को कोई प्रयत्न नहीं किया। प्रो. डिल्लर्ड ने इस दोष की ओर वहाँ भी संकेत किया है जहाँ उसने लिखा है कि कीन्स ने "व्यापार-चक्र के आनुभविक आकड़ों का बारीकी से विश्लेषण नहीं किया है।"

क्लास M.A. SEM-II

शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics दिनांक 14-05-2020,समय-2:10 PM

राजकोषीय नीति (Fiscal Policy.)

1930 ई. के पहले राजकोषीय अथवा वित्तीय नीति का उतना महत्व नहीं था, किन्तु विश्वव्यापी मन्दी से पश्चात् इस नीति का महत्व पड़ने लगा। प्रो. केन्स (J. M. Keynes) की पुस्तक *The General Theory of Employment, Interest and Money* के प्रकाशन के बाद तो विश्व की विभिन्न सरकारों ने राजकोषीय नीति को अपनी आर्थिक नीति का अभिन्न अंग बना लिया। राजकोषीय नीति सरकार की वह नीति होती है जिसके द्वारा राजस्व की क्रियाओं के माध्यम से सरकार अपने आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति करती है। दूसरे शब्दों में, यह वह नीति है जिसके द्वारा सरकार अपना आय-व्यय सम्बन्धी क्रियाओं के द्वारा राष्ट्रीय आय, उत्पादन एवं रोजगार पर वांछित प्रभाव डालती है अथवा अवांछित प्रभावों को दूर करती

है । राजस्व का क्रियाओं के अन्तर्गत सरकारी व्यय, करारोपण, सार्वजनिक ऋण, ऋण-व्यवस्था इत्यादि का क्रियाएँ आती हैं । ऐसा कहा जाता है कि राजकोषीय नीति वह नीति है जिसका सम्बन्ध "सरकारी व्यय एवं करारोपण के आय, उत्पादन तथा रोजगार पर कुल प्रभाव से है ।" (With the aggregate effects of government expenditures and taxation on income, production and employment.) आर्थर स्मिथीज (Arthur Smithies)

## राजकोषीय नीति के उद्देश्य

(Objectives of Fiscal Policy),

ऊपर राजकोषीय नीति की परिभाषा करते समय हम देख चुके हैं कि सरकार इस नीति का प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करती है । अतः यह जानना आवश्यक है कि राजकोषीय नीति के उद्देश्य क्या हैं । यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि राजकोषीय नीति के उद्देश्य विकसित एवं अविकसित देशों में भिन्न-भिन्न होते हैं । उदाहरण के लिए, विकसित देशों में राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य आर्थिक स्थायित्व (Economic Stability) प्राप्त करना होता

है तो अविकसित देशों में इनका उद्देश्य आर्थिक विकास (Economic Development) को बढ़ावा देना तथा आय के वितरण में व्याप्त विषमता को कम करना होता है । राजकोषीय नीति के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं....

1. आर्थिक विकास को बढ़ावा देना (To promote economic development) - राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देना है । आर्थिक विकास का पतलब आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना होता है । आर्थिक विकास के लिए पूँजी-निर्माण (Capital Formation) पहली शर्त है । यह पूँजी-निर्माण धन की बचत एवं विनियोग पर निर्भर करता है । अविकसित देशों में आय की कमी के कारण बचत एवं विनियोग में कमी होती है । अतः, राजकोषीय नीति का उद्देश्य यह होना चाहिए कि आय में वृद्धि हो तथा राजस्व की क्रियाओं द्वारा बचत एवं विनियोग को प्रोत्साहन मिले । आर्थिक विकास के उद्देश्य की प्राप्ति मुख्यतः अविकसित देशों में ही अर्थ रखती है।

क्योंकि विकसित देशों का तो आर्थिक विकास पहले ही हो चुका होता है । फिर भी विकसित देशों में भी राजकोषीय नीति के द्वारा यह प्रयत्न किया जाना चाहिए कि राजस्व की क्रियाओं द्वारा बचत एवं विनियोग के प्रभाव में कोई बाधा न पड़े।

## 2. आर्थिक स्थायित्व को प्राप्त करना (To achieve Economic Stability)

- राजकोषीय नीति का दूसरा उद्देश्य आर्थिक स्थायित्व (Economic Stability) को प्राप्त करना है। आर्थिक स्थायित्व का मतलब अर्थव्यवस्था को मन्दी एवं तेजी अथवा अस्फीति एवं स्फीति की शक्तियों से बचाना है । विकसित देशों में मुख्यतः पूर्ण रोजगार के करीब की स्थिति होती है । अतः विकसित देशों में राजकोषीय नीति का उद्देश्य तथा पूर्ण रोजगार की प्राप्ति के पूर्व भी अर्थव्यवस्था में मन्दी एवं तेजी (Depression and Boom) की अवस्थाएँ आती रहती है । अविकसित देशों में भी राजकोषीय नीति का उद्देश्य आर्थिक स्थायित्व को प्राप्त करना है तथा मूल्य स्थायित्व (Price Stability) इसका अभिन्न अंग है । इसी के द्वारा मन्दी एवं तेजी को रोका जा सकता है । लेकिन राजकोषीय नीति अविकसित देशों में यदि मूल्य-स्थिरता पर जोर देती है तो पूर्ण रोजगार की स्थिति लाने में कठिनाई होगी । इसका कारण यह है कि मुनाफे एवं उत्पादन को प्रोत्साहन देकर रोजगार में वृद्धि करने के लिए मूल्यों में वांछनीय वृद्धि आवश्यक होती है । अतः अविकसित देशों में पूर्ण रोजगार की प्राप्ति के लिए राजकोषीय नीति को यह देखना चाहिए कि मूल्यों में वांछनीय वृद्धि हो लेकिन मूल्य बहुत तेजी से न बढ़ें । आर्थिक स्थायित्व की प्राप्ति के लिए राजकोषीय नीति व्यापार वक्र विरोधी (Counter-cyclical) होनी चाहिए जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

\_3. आय एवं धन के वितरण में समानता लाना (To bring about equality in the \_distribution of incomes and wealth)- राजकोषीय नीति का उद्देश्य आय एवं धन के वितरण में समानता लाना भी है । विभिन्न देशों में और विशेषकर अर्द्धविकसित देशों में आय एवं धन के वितरण में काफी विषमता पायी जाती है । जब तक इस

प्रकार की विषमता रहेगी तब तक समाज में अधिकांश लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा नहीं किया जा सकता । अतः राजकोषीय नीति के प्रयोग द्वारा धनी एवं गरीब के बीच की खाई को पाटने का प्रयत्न किया जाना चाहिए । . करारोपण सार्वजनिक व्यय एवं सार्वजनिक ऋण की नीतियों द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है । इन नीतियों की चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं ।

"किसी भी देश के आर्थिक विकास में मौद्रिक नीति एवं राजकोषीय नीति का महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि जहाँ मौद्रिक नीति मुद्रा के प्रसार तथा संकुचन को नियन्त्रित करती है वहीं राजकोषीय नीति सार्वजनिक व्यय को।"

क्लास M.A. SEM-II

शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics दिनांक 15-05-2020,समय-2:10 PM

## मौद्रिक नीति

(Monetary Policy) आर्थिक नीति की वह शाखा जो अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति के नियमन, समायोजन तथा ब्याज दर में परिवर्तन के द्वारा मूल्य तथा रोजगार की स्थिरता, आर्थिक संवृद्धि तेज करने तथा विदेशी भुगतानों में सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास करती है, उसे मौद्रिक नीति कहते हैं। यह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी की जाती है। \_\_

\_ मौद्रिक नीति अर्थव्यवस्था में तरलता तथा साख की उपलब्धता, निवेश, मूल्य स्तर, रोजगार तथा उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। साख नियन्त्रण मौद्रिक नीति का एक महत्वपूर्ण भाग है।

## परिमाणात्मक साख नियन्त्रण

रिजर्व बैंक द्वारा सामान्यतया प्रयुक्त परिमाणात्मक साख नियन्त्रण के अस्त्र हैं, जो साख की मात्रा को ही प्रभावित करते हैं। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित अस्त्र आते हैं

### **बैंक दर**

वह ब्याज दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा व्यावसायिक बैंकों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराया जाता है, बैंक दर (Bank Rate) कहलाती है। इसमें परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवण्टित ऋणों की ब्याज दर पर पड़ता है।

### **रेपो दर**

वह ब्याज दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा व्यावसायिक बैंकों को लघुकालीन ऋण उपलब्ध कराया जाता है, उसे रेपो दर (Repo Rate) कहते हैं। इसमें परिवर्तन का प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवण्टित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। मुख्य रूप से इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में कमी या वृद्धि करने के लिए किया जाता है।

### **रिवर्स रेपो दर**

वह ब्याज दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक व्यावसायिक बैंकों से लिए गए लघुकालीन ऋणों पर ब्याज देता है, उसे रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate) कहते हैं। वास्तव में व्यावसायिक बैंक अपने बचे हुए अतिरिक्त को भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा कर देते हैं ताकि उन्हें कुछ दिन के लिए कुछ ब्याज प्राप्त हो जाए इसलिए इसे धन की पार्किंग भी कहा जाता है।

### **सावधिक तरलता अनुपात**

**सावधिक तरलता** तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio, SLR) भारत में कार्य करने वाले सभी अनुसूचित बैंकों (देशी/विदेशी) की सकल जमाओं का वह अनुपात है, जिसे उन्हें अपने पास आरक्षित रखना होता है। इसकी मुख्य भूमिका बैंकिंग व्यवस्था की कुल साख को वाणिज्यिक क्षेत्र के मध्य विभाजित करना है। इसमें कमी जहाँ सरकार को एक ओर रिजर्व बैंक से प्राप्त उधार पर प्रभाव डालती है, दूसरी ओर सरकार को रिजर्व बैंक की सरकारी प्रतिभुतियों को खले बाजार में विक्रय करने या रिजर्व बैंक से प्रतिभुतियों के प्रत्याभूत संसाधन प्राप्त करने की स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाती है। इसका निर्धारण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है, जो 25 से 40% के बीच होता है। परन्तु वर्ष 2007 से इसकी न्यूनतम सीमा को समाप्त कर दिया गया है। इसका



मुख्य उद्देश्य बाजार में मुद्रा के प्रसार को नियन्त्रित करना होता है। इसके अधिक होने से बाजार में मुद्रा का प्रसार कम होता है तथा कम होने से मुद्रा का प्रसार अधिक होता है। वर्तमान में यह 18% है।

## नकद आरक्षण अनुपात

नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio, CRR) अनुसूचित बैंकों की सकल जमाओं का वह अनुपात होता है। जिसे उन्हें भारतीय रिजर्व बैंक के पास नकद रूप में रखना पड़ता है। इसको भारतीय रिजर्व बैंक 15% के मध्य सुनिश्चित कर सकता है। वर्ष 2007 से इसके निचले स्तर को समाप्त कर दिया गया है तथा अब यह अनुपात 0-15%(अभी 3%) के बीच है। CRR में वृद्धि से मुद्रा की पूर्ति में कमी आती है तथा कमी से मुद्रा के प्रसार में वृद्धि होती है।

## गुणात्मक या चयनात्मक साख नियन्त्रण

चयनात्मक साख नियन्त्रक वे तरीके हैं, जो साख की मात्रा या परिमाण को नहीं बल्कि उसके प्रवाह को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से नियन्त्रित करते हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य व्यापारिक बैंकों द्वारा अवांछित आर्थिक क्रियाओं के लिए साख देने पर रोक लगाना या उन्हें हतोत्साहित करना है। रिजर्व बैंक प्रमुख रूप से तीन चयनात्मक विधियों का प्रयोग करता है।

- कुछ विशिष्ट प्रतिभूतियों की आड़ में ऋण देने के सम्बन्ध में न्यूनतम सीमा एवं मार्जिन निर्धारित करना।

- कुछ विशेष उद्देश्य के लिए दिए गए ऋणों या सुविधाओं की ऊपरी सीमा निर्धारित करना।

- कुछ विशेष प्रकार के ऋणों पर विभेदात्मक ब्याज दर लगाना।

क्लास M.A. SEM-II

शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics    दिनांक 16-05-2020,समय-2:10 PM

## Introduction of new classical macro economics

1930 के दशक में जब केन्ज़ ने अपना 'सामान्य सिद्धांत' लिखा तब विश्व की मुख्य समस्या बेरोजगारी थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान स्फीति मुख्य आर्थिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आई। विश्वयुद्ध के उपरांत 1960 के दशक तक बेरोजगारी एक बार फिर आर्थिक समस्या बन गई। अगली एक शताब्दी तक बेरोजगारी तथा स्फीति दोनों ने मिलकर एक नया रूप धारण कर लिया, जिसे गतिहीन स्फीति

(stagflation) कहा गया। गतिहीन स्फीति की यह नई समस्या नीति-निर्धारकों तथा अर्थशास्त्रियों के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई, क्योंकि केन्ज़ का सिद्धांत इस विषय में मौन था। अतः इस संकटपूर्ण स्थिति से एक नये समष्टि आर्थिक सिद्धांत का जन्म हुआ, जिसे विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं की परिकल्पना अर्थात् रेटेक्स का नाम दिया गया

### **अनुकूली प्रत्याशाएँ (Adaptive Expectations)**

रेटेक्स परिकल्पना की चर्चा करने से पहले समष्टि अर्थशास्त्र में प्रयोग की गई अनुकूली प्रत्याशाओं के अर्थ को समझना आवश्यक है जिसका विकास रेटेक्स सिद्धांत से पहले हुआ था। प्रत्याशाएँ उन अनिश्चित आर्थिक चरों के संदर्भ में किसी आर्थिक एजेंट द्वारा किए गए पूर्वानुमान या भविष्यवाणियाँ होती हैं जो उसके निर्णय से संबद्ध होती हैं। पूर्वानुमान भूत (past) की प्रवृत्तियों के साथ-साथ वर्तमान सूचना एवं अनुभव पर आधारित होते हैं। आर्थिक सिद्धांत का मुख्य भाग आर्थिक एजेंटों (अर्थात् उपभोक्ता, उत्पादक आदि) द्वारा प्रत्याशाओं के निर्माण में उनके विवेकशील व्यवहार की मान्यता पर आधारित है। परंतु अभी तक अर्थशास्त्री मानवीय व्यवहार के माप में प्रत्याशाओं की भूमिका को शामिल नहीं कर पाए हैं। केन्ज़ ने प्रत्याशाओं के महत्व की चर्चा की परंतु वे इस बात पर चुप थे कि उनका निर्माण किस प्रकार होता है।

हाल के वर्षों में अर्थशास्त्रियों ने मॉडल निर्माण में अनुकूली प्रत्याशाओं की परिकल्पना का व्यापक प्रयोग किया है। इस संदर्भ में 1956 में कैगन (Cagen) और 1957 में नेरलोव (Nerlove) द्वारा किया गया कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। अनुकूली प्रत्याशा परिकल्पना के अनुसार, आर्थिक एजेंटों की प्रत्याशा होती है कि भविष्य भी निश्चय ही भूत की प्रवृत्तियों के अनुसार होगा। वे कीमत आय जैसे आर्थिक चरों के भविष्य मूल्यों को उनके भूत मूल्यों के औसत के रूप में होने तथा बहुत ही धीमी गति से उनके परिवर्तित होने की प्रत्याशा करते हैं। आर्थिक एजेंट इन चरों के प्रत्याशित मूल्य को उनके वर्तमान एवं भूत मूल्यों के भारित (weighted) औसत के समान कर देते हैं। वे अपनी प्रत्याशाओं को पिछली पूर्वानुमान त्रुटि के अनुसार संशोधित करते

हैं। पिछले व्यवहारों के परिणामस्वरूप हुई त्रुटियाँ प्रत्याशाओं के निर्माण के लिए सूचना के एक महत्वपूर्ण स्रोत का संकेत करती हैं। परंतु ऐसी प्रत्याशाएँ इस मान्यता पर आधारित होती हैं कि आर्थिक एजेंट उन भूलों में बहुत कम परिवर्तन होने की प्रत्याशा करते हैं। अतः जब आर्थिक नीति में परिवर्तन होता है तो इससे प्रायः निरर्थक पूर्वानुमान होते हैं।

उदाहरण के लिए, अनुकूली प्रत्याशा परिकल्पना के अनुसार आर्थिक एजेंट, भविष्य की स्फीति दरों की प्रत्याशाओं का निर्माण, पहले अनुभव हुई औसत स्फीति दरों के भारित औसत से करते हैं और यदि वास्तविक स्फीति प्रत्याशित स्फीति से भिन्न होने वाली होती है तो वे समय-समय पर उन प्रत्याशाओं को संशोधित करते हैं। यह आर्थिक एजेंटों के अविवेकी (irrational) व्यवहार को प्रकट करता है। दीर्घकालीन फिलिप्स वक्र का फ्रीडमैन का विश्लेषण अनुकूली प्रत्याशा परिकल्पना पर आधारित है। फ्रीडमैन की त्वरण (acceleration) परिकल्पना में निहित मान्यता कि कीमत प्रत्याशाएँ मुख्य रूप से पहले की स्फीति के अनुभव पर आधारित होती हैं, अवास्तविक है। जब आर्थिक एजेंटों की कीमत प्रत्याशाएँ इस मान्यता पर आधारित होती हैं तो वे अविवेकी होते हैं। यदि वे बढ़ती कीमतों की स्थिति में ऐसा सोचते हैं तो अपने को गलत पाएँगे। इसका कारण है कि प्रत्याशाओं का निर्माण केवल पहले के प्रक्षेपणों (projections) से ही नहीं, बल्कि भविष्य के प्रत्यक्ष पूर्वानुमानों से भी होता है। लोगों की प्रत्याशाओं का — आधार पिछले कीमत परिवर्तनों के साथ-साथ कई घटकों के संबंध में वर्तमान सूचनाएँ भी होती हैं। इस प्रकार, विवेकशील लोग भविष्य की स्फीति का अधिक यथार्थता से पूर्वानुमान करने के लिए सभी उपलब्ध सूचनाओं का प्रयोग करते हैं।